कालिदास के ग्रन्थों में वर्णित गत्यात्मक उपलक्षित बिम्ब एक अध्ययन

डॉ० ब्रह्मचारी पाण्डेय

कवि कालिदास की दृष्टि अत्यंत पैनी है। उन्होंने हर तरह के दृश्यों को देखा है, उनकी कल्पना की है। स्थिर रूपों की तरह गतिशील दृश्यों की भी अच्छी कल्पना की है तथा उन्हें चित्रित भी किया गया है।

सर्वप्रथम रघुवंश महाकाव्य में ऐसे बिम्ब की स्थिति विचारणीय है। संध्या समय अपनी आवास भूमि की ओर जाते हुए पशु-पंक्षियों का एक दृश्य -

सपल्वलोत्तोर्णवराहयूथान्यावासवृक्षोन्मुखाबर्हिणानि।
ययो मृगाध्यासितद्धलानि श्यामायमानानि वनानि पश्यन्।।[1]

संध्या हो गयी नन्दिनी वन से लौट रही है। उसके पीछे-पीछे दिलीप भी आ रहे हैं। थोड़े जल वाले जलाशयों से सूअरों का झुण्ड निकल रहा है। मोर अपने निवास वृक्षों की ओर जा रहे हैं। हरिण भी चारों ओर से विचरण करके आकर हरी-हरी दूबों वाली भूमि पर बैठ गये हैं। ऐसे वन्य-दृश्यों को देखते हुए दिलीप गुरु के आश्रम की ओर लौट रहे हैं।

यहाँ वन-श्री का वर्णन गत्यात्मक रूप में किया गया है। वर्णन मात्र एक श्लोक में है। यहाँ अप्रस्तुत विधान का प्रयोग नहीं है। अतएव इसे गत्यात्मक लक्षित चाक्षुष बिम्ब का उदाहरण माना जा सकता है।

एक अन्य दृश्य-

प्रदक्षिणीकृत्य पयस्विनों तां सुदक्षिणा साक्षतपात्रहस्ता।
प्रणम्य वानर्च विंशालमस्या:शृंगान्तरं द्वारमिवार्थसिद्धे:।।[2]

रानी सुदक्षिणा हाथ में अक्षत युक्त पूजनपात्र ली हुई है। उन्होंने सर्वप्रथम् गो नन्दिनी की प्रदक्षिणा की तथा उसके शृंगों के मध्य भाग अर्थात् मस्तक की पूजा की। दृश्य बड़ा ही स्पष्ट एवं सजीव है। ऐसा लगता है कि सुदक्षिणा पूजन पात्र लेकर उसकी प्रदक्षिणा ही कर रही है। यहाँ गत्यात्मक लक्षित चाक्षुष बिम्ब है।

अयोध्या की ओर लौटते हुए पुष्पक विमान का एक बिम्ब भी आकर्षक है-

कवचित्पथा संचरते सुराणां क्वचिद्धानानां पततां क्वचिच्च।
यथाविधों में मनसो भिलाः प्रवर्तते पश्य तथा विमानम्।।[3]

पुष्पक विमान मन की गति से चलने वाला है। उस पर आरूढ़ व्यक्ति की जैसी इच्छा हुई उसी के अनुसार वह चल पड़ता था। अभी समुद्र पार करके वन्य भाग में प्रवेश करने वाला है। वह आकाश में कभी देवताओं के गमन मार्ग से चलता है तो कभी बादलों के संचरण करने वाली सतह से चलता है तो कभी पंक्षियों के उड़ने वाली सतह से गुजरने लगता है। इस प्रकार वह आकाश में विभिन्न ऊँचाइयों होकर चलता है। इस श्लोक में प्रयुक्त 'क्वचिन्' पद से आकाश के विभिन्न ऊँचाइयों का सहज ही बोध हो जाता है। 'मे मनसो भिलाष:' और 'प्रवर्त्तते पश्य' में 'म' और 'प' की वर्णानुवृत्ति से विमान संचरण का प्रत्यक्षीकरण होता है। ऐसा लगता है कि विमान पाठक की आँखों के सामने ही विभिन्न आकाशीय सतहों पर चल रहा है। यहाँ विमान की गतिशील अवस्था का वर्णन होने से गत्यात्मक बिम्ब है, अप्रस्तुत विधान से मुक्त होने से लक्षित है, एक श्लोक में होने से एकल है। समस्त वर्ण्य विषय दृश्य है। अत: चाक्षुष बिम्ब है।

मृगया के लिए जाते हुए अश्वारूढ़ दशरथ का वर्णन भी बिम्बोत्पादक है-

ग्रथितमोलिरसो वनमालया तरूपलाशसवर्णतनुच्छद:।
तुरगवल्गनचंचलकुण्डलोविरूचे रूचेष्टित भूमिषु।।[4]

व्याख्याता, संस्कृत विभाग, गया कॉलेज, गया।

राजा दशरथ के केशों में वनमाला गुंथी हुई है। वे कवच भी पहने हुए हैं तथा कानों में कुण्डल धारण किये हुए हैं। वे घोड़े पर चढ़कर वनप्रदेश की ओर जा रहे हैं। उस समय उनकी वनमाला और कुण्डल हिल रहे हैं। इस श्लोक के तृतीय पद में ऐसी पदशय्या है जिससे कुण्डलों का हिलना स्पष्ट बिम्बित होने लगता है। 'विरूरूचे' और 'रूरूचेष्टित' पदों से भी गतिशीलता का बोध होता है। इस प्रकार यहाँ लक्षित गत्यात्मक चाक्षुष बिम्ब है।

श्रीराम के अयोध्या-प्रवेश का भी बिम्ब द्रष्टव्य है

स मौलरक्षाहरिभि: सैन्यस्तूर्यसवनानन्दितपोरवर्ग:।

विवेश सौधोद्गतलाजवर्षामुत्तोरणामन्वयराजधानीम्।।[5]

आज श्रीराम अपनी परम्परागत राजधानी अयोध्या लौट रहे हैं। अयोध्या नगरी बन्दनवारों से सजायी गयी है। लुरही बाजे बज रही है। ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं से धान की लाजा (लावा) की वर्षा की जा रही है। बाजों की ध्वनि सुनकर, लाजा वर्षण देखकर तथा श्रीराम के आगमन, सुख की चर्वणा करके नगर निवासी काफी प्रसन्न हैं। यहाँ उल्लसित जनसमूह का चित्र खींचा गया है। वर्णन इतना प्रभावशाली है कि स्पष्ट छवि मानस पटल पर अंकित हो जाती है। यहाँ भी गत्यात्मक लक्षित बिम्ब ही है।

कुमारसम्भव में ऐसे बिम्बों का अभाव नहीं है। इससे भी एक-दो उद्धरण देख लेना आवश्यक है। पार्वती द्वारा शिवपूजन का एक बिम्ब है -

अवचितवलिपुष्पा वेदिसम्मार्गदक्षा,

नियमविधिजलानां बर्हिज़ां चोपनेत्री।

गिरिशमुपचचार प्रत्यहं सा सुकेशी,

नियमित परिखेदा तच्छिरश्चन्द्रपादै:।।[6]

पार्वती प्रतिदिन पूजन के लिए फूल तोड़-तोड़कर लाती है, वेदिका को झाड़-बुहारकर साफ सुथरा रखती है, नित्यकर्म के लिए जल तथा कुश ले आती है। वह इन सारे कार्यो को करती हुई थक जाया करती है। पुन: वह श्रद्धापूर्वक शंकर की सेवा-सुश्रूषा करती रहती है। सेवा के क्रम में ही शंकर के मस्तक पर विराजमान चन्द्रमा की शीतल किरणों से अपनी थकावट दूर करती है।

यहाँ पार्वती की विविध क्रियाओं का वर्णन है पुष्पचन, वेदी-सम्मार्जन, नित्यकर्म हेतु कुश और जल लाना तथा शंकर की सेवा-सुश्रूषा करना लगातार वर्णित है। इससे पार्वती की व्यस्तता स्वत: दृष्टिगोचर होने लगती है। यह बिम्ब गत्यात्मक है, अतीव सशक्त भी है। यह बिम्ब नेतेन्द्रिय बोध्य है। अत: यह चाक्षुष है तथा एक पद्यात्मक होने से लक्षित भी।

शिव-पार्वती-विवाह प्रसंग में अग्नि प्रदक्षिणा का एक बिम्ब अत्यंत मोहक है-

तौ दम्पती त्रि: परिणीयवह्नि,

मन्योन्यसंस्पर्शनिमोलिताक्षो।

स कारयामास वधूं पुरोध,

स्तस्मिन्समिधचिषि लाजमोक्षम्।।[7]

पाणिग्रहण संस्कार के क्रम में शिव और पार्वती ने अग्नि की तीन प्रदक्षिणायें कीं। तब पुरोहित ने पार्वती के हाथों से उस प्रज्वलित अग्नि में धान की लाजा की आहूति डलवायी। विवाह-कृत्य में अग्नि प्रदक्षिणा एवं लाजाहुति का विधान है, साथ ही प्रचलन भी है। इस कृत्य के उल्लेख मात्र से नव दम्पती (शिव-पार्वती) की अग्नि प्रदक्षिणा का दृश्य स्वयमेव उपस्थित हो जाता है और पाठक उसका भावन करने लगता है। मेरा दृष्टि में परम्परा या रूढ़ि के वर्णन के कारण इस दृश्य का इन्द्रियबोध होने लगता है।

नवम सर्ग में भृंगी तथा कालिंका के नृत्य का भी सुन्दर बिम्ब है -

1. चलच्छिखाग्रो विकटाङ्गभङ्ग सुन्दन्तुर:
   शुक्लसुतीक्ष्णतुण्ड:।

   भ्रवोपदिष्ट:स तु शंकरेणा तस्या विनोदाय ननर्त भृंगी।।[8]

2. कण्ठस्थली लोलकपालमाला दष्ट्राकरालाननम-यनृत्यन्।

   प्रीतेन तेन प्रभुणा नियुक्ता काली कलत्रस्य मुदे प्रियस्य।।[9]

पार्वती का मन बहलाने के लिए भगवान शंकर ने भौहों से नन्दी को संकेत दिया। उनका निर्दोष पाकर नन्दी ने नृत्य दिखाना प्रारंभ कर दिया। नृत्य के क्रम में सफेद, ऊँचे तथा तेज दाँतों से युक्त उनका मुँह विचित्र सा हो गया तथा उनकी चोटी तेजी से नाचने लगीं। इस पद्य में प्रयुक्त 'विकटाड्.गभड्.ग' पद से आंगिक भंगिमा तथा 'ननर्त' पद से नृत्य क्षिप्रता स्वत: प्रकट हो जाती है। दृश्य स्पष्ट हो जाता है। सहज ही इसका चाक्षुष-प्रत्यक्ष होने लगता है।

दूसरे पद्य में कालिका के नृत्य का वर्णन है। पार्वती को प्रसन्न करने के लिए कालिका भी नाचने लगी। उसने गले में जो खोपड़ियों की माला पहन रखी थी वह तेज से हिलने लगी। स्वभावत: भयावने उनके दाँत और भी डरावने लगने लगे।

उपर्युक्त दोनों व्यक्तियों के नृत्य का अलग-अलग वर्णन है। इसलिए यह बिम्ब एकल है। नृत्य मुद्रा का वर्णन होने से गत्यात्मक है। पूरे दृश्य का बोध नेत्रेन्द्रिय ग्राह्य है। इसलिए यहाँ लक्षित चाक्षुष बिम्ब है।

मेघदूत से इस प्रकार के एक बिम्ब का उदाहरण-

तत्रावृयं वलयकुलिषोद्घट्टानोद्गीर्णतोयं,
नेष्यन्ति त्वां सुरयुवतयो यन्त्रधारागृहत्वम्।
ताल्यो मोक्षस्तव यदि सखे धर्मलब्धस्य न स्यात्।
क्रीड़ालीला श्रवणपरूषेर्गर्जतेर्भाययेस्ता:।।[10]

कैलाश पर्वत पर जब मेघ अधिक संघटित हो जायगा तो देवताओं की स्त्रियाँ अपने कड़ों से रगड़ कर (मेघ से) पानी बरसाने लगेंगी। ऐसी स्थिति में मेघफव्वारा जैसा बन जायेगा और उससे जल तेजी से झरने लगेगा। गर्मी अधिक होने के कारण देवताओं की स्त्रियाँ मेघ को छोड़ना नहीं चाहेंगी, तब मेघ को चाहिए कि अपने कठोर गर्जनों से उन्हें डरवा दे और मार्ग तय करे।

मेघ का जमना, देवताओं की स्त्रियों द्वारा कड़े से रगड़ा जाना, उससे फव्वारे के रूप में जल गिरना, फिर मेघ का घोर गर्जन करना, स्त्रियों का भयभीत होना ये समस्त क्रियायें गत्यात्मक है। वर्णन मात्र से पूरा दृश्य सामने दिखलायी देने लगता है। अत: यह चाक्षुष बिम्ब है और लक्षित तथा एकल कोटि का है।

नाचते हुए मयूर का एक बिम्ब दर्शनीय है -

ज्योतिलेखावलयि गलितं यस्य बर्ह भवानी,
पृत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति।
धोतापांगं हरशशिरूचा पावकेस्तं मयूरं,
पश्चादद्रिग्रहणगुरुभिर्ग जितैर्नर्तयेथा:।।[11]

इस श्लोक को पढ़ने से स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है कि हिमालय प्रदेश में काले मेघ समूह छाये हुए हैं। मेघ पटलों में कभी-कभी जोरों का गर्जन हो रहा है। उस गर्जन को सुनकर आकर्षित होकर मोर नाच रहे हैं। यह बिम्ब अतीव प्रभावशाली है। मयूर के नर्तन का दृश्य वर्णित होने से यह बिम्ब गत्यात्मक है। यहाँ लक्षित चाक्षुष बिम्ब है।

ऋतुसंहार में ग्रीष्म-वर्णन प्रसंग में गत्यात्मक बिम्ब द्रष्टव्य है -

समुद्धृताशेषमृणालजालकं विपन्नमीनं द्रुतभीतसारसम्।
परस्परोत्पीडनसंहतेर्गजैः कृतं सर: सान्द्रविमर्दकर्दम्।।[12]

ग्रीष्म काल है। हाथी गर्मी से संतप्त है। वे स्नान करने के लिए जलाशय में समाये हुए हैं। वे एक-दूसरे को तालाब से निकालने के लिए परेशान कर रहे हैं।

इन हाथियों के उत्पात से तालाब के कमल नष्ट हो रहे हैं, मृणाल बर्बाद हो रहे हैं। इनके उपद्रव से मछलियाँ भी भयभीत हैं। वे सारसों का भी विनाश कर रहे हैं। जलाशय का जल पंकिल हो रहा है।

यहाँ सारी क्रियाओं का स्पष्ट एवं स्वाभाविक वर्णन है। इससे पूरा दृश्य दृष्टिगोचर होने लगता है। हाथियों की गत्यात्मक स्थिति का वर्णन होने से बिम्ब गत्यात्मक है। यहाँ कोई स्फुट अलंकार नहीं है। अतएव यह लक्षित कोटि का चाक्षुष बिम्ब है।

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां,
यदद्धाविच्छिन्नं भवति कृतसन्धानमिव तत्।
प्रकृत्या यदवक्रं तदपि समरेखं नयनयो,

न मे दूरे किंचित्क्षणमपि न पार्श्वे रक्षजवात्।।[13]

रथ तेज भाग रहा है, दूर से जो वृक्ष आदि छोटे लग रहे हैं, शीघ्र ही रथ के सामने जाने पर उन वस्तुओं की वास्तविक विशालता प्रकट होती जा रही है। जो पेड़-पौधे वस्तुत: पृथक-पृथक् थे, शीघ्र ही रथ उनसे आगे इतनी दूर चला जा रहा है कि वे सब एक में जुड़े हुए जैसे लग रहे हैं।

गत्यात्मक उपलक्षित बिम्ब :

इस कोटि में ऐसे बिम्बों को सम्मिलित किया जायगा जो एक श्लोक तक ही सीमित हों, वर्ण्य विषय की गत्यात्मक स्थिति का वर्णन हो तथा वर्णन के लिए अप्रस्तुत विधान का उपयोग किया गया है।

रघुवंश के द्वितीय सर्ग से एक उद्धरण -

मरूत्प्रयुक्ताश्च मरूत्सखाभं तमर्च्यमारादभिवर्तमानम्।
अवाकिरन्वाललता: प्रसूनैराचारलाजैरिव पोरकन्या।।[14]

गोचारण क्रम में जब राजा दिलीप पुष्प लताओं के समीप पहुँचते हैं तो वायु से प्रेरित होकर वे उन पर फूल बरसाती हैं। जैसे प्रसन्नचित्त पुरकन्यायें स्वागतार्थ राजा पर धान्यखिलों की वर्षा कर रही हों।

यहाँ 'मरूत्प्रयुक्ताश्च' 'मरूत्सखाभं' इन पदों की घ्वनि से वायु द्वारा लताओं का प्रकम्पन परिलक्षित होता है। 'अवाकिरन्' क्रियापद से बिखेरने का भाव स्पष्ट बिम्बित होता है। यहाँ उपमा के माध्यम से वण्यं दृश्य को प्रस्तुत किया गया है। यह उपलक्षित गत्यात्मक चाक्षुण बिम्ब का सुन्दर उदाहरण है।

कुमारसम्भव में भी इस प्रकार के बिम्बों का प्राचुर्य है। एक उदाहरण -

भयभीत पार्वती को गिरिराज हिमालय हाथों में उठाकर लिये जा रहे हैं -

स्पादि मुकुलिताक्षीं रूद्रसंरम्भभीत्या,
दुहितरमनुकम्प्यामद्रिरादाय दोभ्याम्।
सुरगज इव बिभ्रत्पद्मिनी दन्तलग्नां,
प्रतिपथगीतरासीद् वेगदीर्धीकृताङ्.ग:।।[15]

अपनी आँखों के सामने कामदहन की घटना देखकर पार्वती भयभीत हो गयी। शंकर के रौद्र रूप से डरकर उसने अपनी आँखें बन्द कर ली। पिता हिमवान् आये और अपनी बाहुओं में उसे उठाकर तीव्र गति से राजमहल में चले गये। विशाल शरीर वाले हिमवान् उस समय ऐसा लग रहे हैं जैसे अपने दाँतों के बीच फँसी कमलिनी को ऐरावत लिये जा रहा हो।

शिव के पीछे-पीछे भद्रकाली के चलने का बिम्ब बहुत सुन्दर है -

तासां च पश्चात्कनकप्रभाणां काली कपालभरणा चकासे।
बलात्किनी नीलपयोदराजी दूरं पुर: क्षिप्तशतहृदेव।।[16]

शिव के संग सप्तमातृकायें चलीं। इनकी आंगिक कान्तिस्वर्ण के समान है। उनके पीछे-पीछे कृष्णवर्णा भद्राकाली चलीं। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे वकपंक्ति से घिरी हुई विद्युत युक्त मेघों की घटा चली आ रही हो।

गौरवर्णा सप्तमातृकाओं से घिरी कृष्णवर्ण वाली भद्रकाली के चलने का दृश्य अत्यंत मनोरम है। यहाँ कवि ने अप्रस्तुत विधान का भी अवलम्ब लिया है। गत्यात्मक दृश्य का वर्णन है। यह बिम्ब नेत्रेन्द्रिय ग्राह्य है। अत: यहाँ उपलक्षित चाक्षुष बिम्ब है। स्थिर और गत्यात्मक दृष्टि से भेद करने पर गत्यात्मक कोटि का है।

मेघदूत तो चित्रों का एक अलबम ही है। इसमें तो हर प्रकार के दृश्यों का बिम्ब है। इसमें उपलक्षित गत्यात्मक चाक्षुष बिम्ब के कई उदाहरण मिलते हैं, उनमें से एक-दो स्थलों को प्रस्तुत करना आवश्यक है।

स्थित्वा तस्मिन्वनचरवधू भुक्तकुंजे मुहूर्त,
तोयोत्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्मतीर्ण:।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे बिन्धयपादे विषीर्णा,
भक्तिच्छेदेरिव विरचितां भूमिमङ्.गे गजस्य।।[17]

यक्ष मेघ को निर्देश देता है कि आम्रकूट पर्वत पर कुछ ठहरने के बाद जलवर्षण कर देना। जलोत्सर्जन से तुम्हारा शरीर कुछ हल्का हो जायगा। अत: तीव्र गति वाला होकर आगे की ओर चलोगे। जाते हुए तुम बिन्ध्य

की तलहटी में ऊँची-नीची पथरीली भागों में बहती हुई रेवा (नर्मदा) नदी को देखोगे। उबड़-खाबड़ भूमि के कारण कई भागों में बिखर कर बहती हुई वह नदी ऐसा प्रतीत होगी जैसे हाथी के शरीर पर बेलबूटों के नमूनों से सजावट की गयी हो।

मेघ का आम्रकूट के ऊपर आच्छादित होना, जलवर्षण करना, पुन: तीव्रगति से चलना, बिन्ध्य प्रदेश में पहुँचना, वहाँ लड़खड़ाती हुई रेवा नदी का बहना- ये क्रियायें गत्यात्मक है। इस दृश्य के वर्णन में उपमालंकार का प्रयोग है। सम्पूर्ण दृश्य नेत्रेन्द्रिय ग्राह्य है। अत: इस पद्य में एकल उपलक्षित गत्यात्मक चाक्षुष बिम्ब है।

गत्वा सद्य: कलभतनुतां शीघ्रसम्पातहेतो:,
क्रीडाशेले प्रथमकथिते रम्यसानो निषण्ण:।
अर्हस्यन्तर्भवनपतितां कर्तुमल्पाल्यभासं,
छद्धोताटलीविलसितनिभां विद्युदून्मेषदृष्टिम्।।[18]

अलका नगरी में पहुँचने पर, यक्ष का भवन पहचान लेने पर मेघ हाथी के बच्चे के समान छोटा शरीर धारण करके नीचे उतरेगा और क्रीड़ाशैल की शिखर पर बैठकर अपनी विद्युत रूपी दृष्टि को भवन के भीतर डालेगा। उस समय मेघ की सौदामिनी क्षीण प्रकाश होने के कारण जुगनुओं की तरह प्रतीत होगी।

मेघ का अलका में पहुँचना, लघु रूप धारण करना, आकाश से नीचे उतरना, क्रीड़ाशैल पर बैठना अपने मंद-मंद विद्युत प्रकाश को भवन के भीतर डालना। ये समस्त क्रियायें गत्यात्मक हैं। यहाँ 'खद्योतालीविलसितनिभां' में उपमा का प्रयोग है। इस श्लोक में प्रयुक्त 'सद्य:' और 'शीघ्र' शब्द यद्यहिप क्षिप्रताबोधक है किन्तु इनसे शीघ्रता ध्वनित भी होती है, जो मेघ के शीघ्र अवतरण को बिम्बित करने में काफी सहयोगी है। इसी तरह 'निषण्ण:' में 'ण्' की संयुक्तता से मेघ के बैठने और 'अल्पाल्प' पद से उत्पन्न ध्वनि से विद्युतप्रकाश की टिमटिमाहट का सहज ही बोध हो जाता है। अर्थात् इस श्लोक में शब्दों का सुन्दर विन्यास है जिससे बिम्ब की शीघ्र ही सृष्टि होती है। अप्रस्तुत विधान का संयोग होने से यह बिम्ब उपलक्षित कोटि का है और चाक्षुष है। मेघ की समस्त गतिशील अवस्था का वर्णन होने से यहाँ गत्यात्मक बिम्ब है।

पूर्वमेघ से एक अन्य उदाहरण -

तस्या पातुं सुरगज इव व्योम्नि पश्चार्धलम्बी,
त्वं चेदच्छस्फटिकविशदे तर्कयेस्तिर्यगम्भ:।
संसर्पन्त्या सपदि भवत: श्रोतसिच्छायया सौ,
स्यादस्थानोपगतयमुनासंगमेवाभिरामा।।[19]

कालारंग, विशाल आकृति तथा झुका हुआ अग्रभाग मेघ और सुरगज के उभयनिष्ठ धर्म है। गंगाजल की स्फटिक मणि से तुलना करके उसकी स्वच्छता एवं शुभ्रता को व्यक्त किया गया है। श्वेत गंगाजल में कृष्ण मेघ छाया के सम्मिश्रण को बताने हेतु गंगा यमुना के संगम को चुना गया है। क्योंकि मेघ और यमुनाजल में कालिमा की समानता है। मेघ की छाया का 'संसर्पन्त्या' विशेषण इतना सशक्त है कि सारे स्थिर बिम्ब को गत्यात्मक बना दे रहा है। इस विशेषण के द्वारा कवि ने स्पष्ट कर दिया है कि गंगा की चंचल लहरों में हिलती-डुलती मेघछाया को चित्रित करना ही उसका प्रधान लक्ष्य है।

ऋतुसंहार में भी ऐसे बिम्बों की कमी नहीं है। वर्षाकालीन वेगवती नदियों का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है -

निपातयन्त्य: परितस्तटद्रुमान्,प्रवृद्धवेगे: सलिलेरनिर्मलै:।
स्त्रिय: सुदृष्य इव जातिबिभ्रमा:प्रयान्ति नद्यस्तवरितं प्योनिधिम्।[20]

यहाँ नदियों की जलधारा की गतिशीलता वर्णित है तथा अप्रस्तुत का प्रयोग भी है। अत: यहाँ उपलक्षित गत्यात्मक चाक्षुष बिम्ब है।

शरद् ऋतु में नदियों का जल कम हो गया। उनकी धारा मंद हो गयी। अब वे विलासपूर्ण गति से चलती है। उनमें छोटी-छोटी मछलियाँ फुदकती चलती है। और मछलियों के अण्डे मालाकार रूप में फैले हैं। उनका पाट अब भी फैला हुआ ही है। ये नदियाँ उन्मत्त रमणियों सदृश प्रतीत हो रही है। रमणी के अर्थ में -

ये रमणियाँ (मुखरित मछलियाँ रूप) करधनी पहनी हैं (सर्वत्र व्याप्त अण्डों रूपी) मालायें पहनी हुई हैं (विस्तृत तटरूपी) रमणियों के नितम्ब विशाल है। वे नितम्बगुरूता के कारण धीरे-धीरे चलती है, अलस गति से।

ताड़कावधः

प्रसंग में कवि संश्लिष्ट बिम्ब की रचना करते समय ताड़का का एक विगर्हणीय रूप है यहाँ अमावस्या की रात्रि के समान काली कलूटी प्रेतों के चीवर पहनी हुई, कमर में आँतों की तगड़ी धारण की हुई श्मशान की झंझावत जैसे ताड़का का कानों में लटकाये गये मनुष्यों की खोपड़ियों के कुण्डलों को हिलाते हुए मार्ग के वृक्षों को ढहाते हुए तथा विकराल बाहों को उठाते हुए राम पर झपटने का वर्णन करके गत्यात्मक चाक्षुष बिम्ब प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्षः

ज्यानिनाद तथा स्वनोग्रया पद ध्वनिसंवेदना को जगाते हैं। चलकपालकुण्डला उद्यतैकभुजयष्टिम् मुमोच तथा प्रादुरास शब्द बिम्ब में गति ला रहे हैं। साथ ही बहुल-क्षणा-छविः निबिडा बलाकिनी कालिकेव एवं पितृकाननोत्थया वात्ययेव उपमानों के द्वारा निर्दिष्ट अमावस्या की रात्रि सघनबकपंकित युक्ति बदली एवं श्मशान की झंझा के अपने-अपने स्वतंत्र बिम्ब है, जो उपलक्षित वर्ग में आते हैं। कुमार सम्भव में कवि ने अग्नि के स्वागतार्थ पद ध्वनिसंवेदना को जगाते हैं। चलकपालकुण्डला तीव्रवेगध ुतमार्गवृक्षया उद्यतैकभुजयष्टिम् मुमोच तथा प्रादुरास शब्द बिम्ब में गति ला रहे हैं। साथ ही बहुल-क्षणा-धविः निबिडा बलाकिनी कालिकेव एवं पितृकाननोत्थया वात्ययेव उपमानों के द्वारा निर्दिष्ट अमावस्या की रात्रि सघनबकपंक्ति युक्ति बदली एवं श्मशान की झंझा के अपने-अपने स्वतंत्र बिम्ब हैं, जो उपलक्षित वर्ग में आते हैं। यहाँ अग्नि रूप तेज का सुषुम्ना नाड़ी में निक्षेप तथा उसका षडचक्रों द्वारा वहन आदि यौगिक क्रियाओं का बिम्ब व्यंजना ग्राह्ण है। मरालैः सा कलं कूजद्भिरून्मदैः में ध्वनि बिम्ब है। मेघदूत एवं ऋतुसंहार में ऐसा कोई बिम्ब दृष्टिगोचर नहीं होता जो चाक्षुष संश्लिष्ट गत्यात्मक एवं उपलक्षित सभी विशेषताओं से युक्त हो।

उपर्युक्त बिम्बों के अतिरिक्त समुद्र की हलचल, 4 लवणासुर की विकरालता, 5 वायव्य अस्त्र की आँधी, 6. अग्निवाण की ज्वालाएँ आदि विम्ब भी इसी वर्ग में आते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. रघुवंश, 2/17
2. रघुवंश, 2/21
3. रघुवंश, 13/19
4. रघुवंश, 9/51
5. रघुवंश, 14/20
6. कुमारसम्भव, 1/60
7. कुमारसम्भव, 7/80
8. कुमारसम्भव, 9/48-49
9. मेघदूत, पूर्वमेघ, 64
10. मेघदूत, पूर्वमेघ, 48
11. ऋतुसंहार, 1/19
12. अभिज्ञानशाकुन्तल, 1/9
13. अभिज्ञानशाकुन्तल, 1/19
14. अभिज्ञानशाकुन्तल, 1/8
15. रघुवंश, 2/10
16. कुमारसम्भव, 3/76
17. कुमारसम्भव, 7/39
18. मेघदूत, पूर्वमेघ, 19
19. मेघदूत, उत्तरमेघ, 21
20. मेघदूत, पूर्वमेघ, 1/55